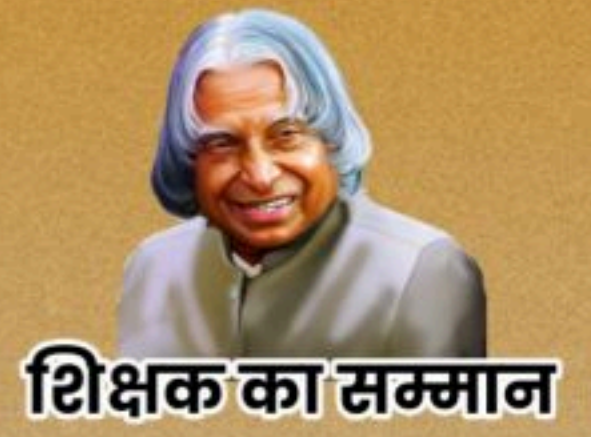




मिशन शिक्षण संवाद का मासिक साहित्य संकलन



अंक : 64

शिक्षण संवाद

माह : जुलाई

वर्ष : 2026



आओ हाथ से हाथ मिलाएं, बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं।

अंक : 64

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद का मासिक संकलन

प्रधान सम्पादक

श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक

श्री अवनीन्द्र कुमार जादौन, श्री प्रांजल सक्सेना

सम्पादक

श्री आनंद मिश्रा, सुश्री ज्योति कुमारी, श्री बबलू सोनी

सह-सम्पादक

श्री सुरांत सक्सेना, श्री शंखधर द्विवेदी

छायांकन

श्री वीरेन्द्र परनामी

ग्राफिक एवं डिजाइन

श्री जितेन्द्र कुमार, श्री अनिल मौर्य, श्री विकास शर्मा

विशेष सहयोगी

श्री विकास मिश्रा, श्री अफज़ाल अहमद, श्री साकेत बिहारी शुक्ल





आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं



व्हाट्सएप एवं संपर्क नं० :-
[9458278429](tel:9458278429)



ई मेल :-
shikshansamvad@gmail.com



वेबसाइट :-
www.missionshikshansamvad.com





मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि “मिशन शिक्षण संवाद” पत्रिका विगत कई वर्षों से निरंतर प्रकाशित होकर शिक्षा के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बना रही है। पत्रिका को नियमित रूप से मासिक रूप में प्रकाशित करने का निर्णय अत्यंत प्रशंसनीय एवं अभिनंदनीय है। यह पहल न केवल पत्रिका की निरंतर विकास यात्रा को गति प्रदान करेगी, बल्कि शिक्षक समुदाय की शैक्षिक आवश्यकताओं, नवाचारों एवं अपेक्षाओं को भी एक प्रभावी मंच प्रदान करेगी।

यह पत्रिका शिक्षकों के अभिनव विचारों, विद्यालयों में किए जा रहे रचनात्मक प्रयासों तथा उत्कृष्ट शैक्षणिक प्रयोगों का प्रेरणादायी संकलन बनकर सामने आ रही है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों की प्रतिभा, उपलब्धियों एवं उल्लेखनीय कार्यों के साथ-साथ समाज और समुदाय के सहयोग को भी उचित स्थान और पहचान मिल रही है।

उत्तर प्रदेश के साथ-साथ देश के विभिन्न राज्यों के शिक्षकों के अनुभवों एवं उल्लेखनीय योगदान को स्थान देकर पत्रिका ने अपने स्वरूप को और अधिक व्यापक, समावेशी एवं प्रेरणादायी बनाया है। निश्चित रूप से यह प्रयास शिक्षकों को एक-दूसरे से सीखने, नवाचारों को साझा करने और शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित करेगा।

इस उत्कृष्ट एवं सार्थक पहल के लिए “मिशन शिक्षण संवाद” के समस्त संपादकीय मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। मेरी कामना है कि यह पत्रिका निरंतर नई ऊँचाइयाँ प्राप्त करे, अधिक से अधिक शिक्षकों एवं पाठकों तक पहुँचे तथा शिक्षा जगत में अपनी प्रेरणादायी भूमिका को और सशक्त बनाए। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य एवं निरंतर सफलता हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

सादर

Nulom Rai

नीलम राय

(राज्य पुरस्कृत शिक्षक)

प्राइमरी स्कूल मंडुआडीह

वाराणसी





प्रिय शिक्षक साथियो, शिक्षाविदो, अभिभावको एवं प्रिय विद्यार्थियों, ग्रीष्मकालीन अवकाश के बाद जुलाई आते ही विद्यालयों के दरवाजे फिर खुलते हैं, फिर पुनः शुरू होता है विद्यालय में प्रवेश उत्सव तथा विद्यालय के गलियारों में गूँजती हैं बच्चों की आवाजें, सजती हैं कक्षाएँ और कई नन्हें नये चेहरे पहली बार विद्यालय की दुनिया से परिचित होते हैं। किसी के लिए यह केवल नया प्रवेश है, लेकिन उस बच्चे और उसके परिवार के लिए यह एक बड़ी उम्मीद की शुरुआत हो सकती है। क्योंकि एक बच्चा जब पहली बार विद्यालय आता है, तो वह केवल किताबें लेकर नहीं आता। वह अपने घर का वातावरण, अपनी जिज्ञासाएँ, अपने डर, अपनी आदतें और अपने छोटे-बड़े सपने भी साथ लेकर आता है। इसलिए उसका स्वागत केवल नामांकन रजिस्टर में नाम लिखकर पूरा नहीं होता। उसका मन विद्यालय में स्वीकार किया जाए। यही प्रवेश उत्सव की पहली सार्थकता है।

हो सकता है कोई बच्चा पहली बार कक्षा में बोलने से झिझके। कोई पढ़ने में पीछे हो। कोई आर्थिक या पारिवारिक कठिनाइयों से जूझ रहा हो। किसी को घर में पढ़ने का वातावरण न मिला हो। ऐसे बच्चों के लिए शिक्षक की एक मुस्कान, धैर्य से सुनी गई एक बात और समय पर दिया गया प्रोत्साहन बहुत बड़ा सहारा बन सकता है। इसीलिए किसी विद्यालय की असली खूबसूरती तब दिखाई देती है, जब वहाँ किसी बच्चे की परिस्थिति उसके भविष्य का फैसला नहीं करती।

जुलाई का प्रवेश उत्सव हमें इसी मानवीय जिम्मेदारी की याद दिलाता है।

हम विद्यालय में बच्चों को जोड़ने की बात करते हैं, लेकिन हमें यह भी देखना होगा कि कोई बच्चा विद्यालय से दूर क्यों है?

क्या हमारा समाज, शासन, विद्यालय और शिक्षक, ग्रामीण निर्धन एवं अव्यवस्थित परिवेश में पलने, बढ़ने वाले बच्चों के जीवन की कठिनाइयों को जानकर, उनके समाधान का हिस्सा बन पा रहे हैं?

क्योंकि यह भी एक बच्चे की शिक्षा का प्रारम्भिक और सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है जो बच्चे का विद्यालय में उपस्थित रहने और उनका पढ़ाई में मन लगने का सबसे महत्वपूर्ण कारण होता है।

इसलिए एक बच्चे को विद्यालय तक लाना जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही महत्वपूर्ण है उसके परिवार और परिवेश को समझना और उनमें से उन कठिनाइयों का समाधान करना जो बच्चों की उपस्थिति एवं सीखने में मन लगने में बाधक बन रही हो।



इसीलिए “प्रवेश उत्सव” को सजावट और औपचारिक कार्यक्रम से आगे ले जाने की आवश्यकता है। यह ऐसा अवसर बने जहाँ शिक्षक, अभिभावक और विद्यार्थी एक-दूसरे को जानें, पहचानें और समझें, पुराने विद्यार्थी नए साथियों को अपनाएँ, अभिभावक विद्यालय पर विश्वास करें और हर बच्चा यह अनुभव करे कि “यह विद्यालय मेरा है, मेरे लिए है, यहाँ मेरी बात सुनी जाएगी और यहाँ मेरे सपनों को जगह मिलेगी।”

मिशन शिक्षण संवाद का उद्देश्य भी शिक्षा को केवल पाठ पढ़ाने की प्रक्रिया न मानकर मानव कल्याण से जोड़ना है। यदि शिक्षा किसी बच्चे में आत्मविश्वास जगाती है, किसी परिवार की चिंता कम करती है और समाज में किसी के प्रति संवेदना पैदा करती है, तभी उसका वास्तविक प्रभाव दिखाई देता है। इसलिए नए प्रवेश पाने वाले प्रत्येक बच्चे का स्वागत इस भावना से करें कि हम केवल एक विद्यार्थी का विद्यालय में प्रवेश नहीं करा रहे, बल्कि एक जीवन को बेहतर संभावनाओं की ओर बढ़ने का अवसर दे रहे हैं।

इसी विश्वास के साथ “शिक्षण संवाद” का यह अंक आपके सामने है। इसमें केवल पढ़ने के लिए सामग्री नहीं, बल्कि अपने विद्यालय, अपने विद्यार्थियों और अपने आसपास के समाज को देखने के कुछ नए दृष्टिकोण भी हैं।

पढ़िए, अपने अनुभवों से मिलाइए, जो सार्थक लगे उसे अपनाइए और अपने विचार हमें भेजिए। क्योंकि संवाद तभी जीवित रहता है, जब विचार पढ़ने के साथ-साथ जिए भी जाते हैं।

सादर निवेदन के साथ
विमल कुमार
टीम मिशन शिक्षण संवाद



शीर्षक	पृष्ठ संख्या
मिशन गीत	8
विचारशक्ति	9-10
टीएलएम संसार	11
नवाचार	12
बात महिला शिक्षकों की	13-15
प्रेरक प्रसंग	16-17
सद् विचार	18-20
शैक्षिक तकनीकी	21-22
बच्चों का कोना	23
बाल कहानी	24-25
शैक्षिक गतिविधि	26
दिवस विशेष	27-28
खेल विशेष	29-30
योग विशेष	31-32
बाल फिल्म	33





मिशन गीत

मिशन शिक्षण संवाद - बढ़ाए ज्ञान का भण्डार

ज्ञान की जो लौ जलाए,
हर अँधेरे को मिटाए।
बिना स्वार्थ जो शिक्षा दे,
वह "मिशन शिक्षण संवाद" कहलाए॥

न कोई लोभ, न कोई तन्त्र,
"सेवा" ही मिशन का है मूल मन्त्र।
बच्चों के सपनों को पंख लगे,
जब शिक्षकों का सच्चा साथ मिले॥

गाँव-गाँव, शहर-शहर,
जहाँ भी हो अज्ञान की लहर।
वहाँ पहुँच जाए ये अभियान,
जैसे सूरज लाए नई भोर॥

पढ़ाओ, बढ़ाओ, समझाओ प्यार से,
छू लो दिल हर एक उपकार से।
माँ-बाप भी अब जानें ये बात,
शिक्षा ही है जीवन की सौगात॥

मिशन नहीं ये सिर्फ नाम का,
संवाद है ये अच्छे काम का।
चलो जुड़ें हम सब इस राह में,
बदलें देश को ज्ञान के प्रकाश से॥



प्रतिमा उमराव (सा०अ०)

उच्च प्राथमिक विद्यालय अमौली (1-8)

विकास खण्ड- अमौली, जनपद- फतेहपुर





शिक्षा : अंधकार से प्रकाश की यात्रा

मानव सभ्यता के इतिहास पर यदि एक विहंगम दृष्टि डाली जाए, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि मनुष्य की सबसे बड़ी और सबसे क्रांतिकारी यात्रा अज्ञान के अंधकार से निकलकर ज्ञान के प्रकाश की ओर रही है। इस संपूर्ण यात्रा का यदि कोई सबसे सशक्त और जीवंत माध्यम है, तो वह केवल और केवल शिक्षा है। शिक्षा वह पारस मणि है, जिसके स्पर्श से साधारण जीवन भी असाधारण उपलब्धियों और संस्कारों के स्वर्ण में परिवर्तित हो जाता है। यह केवल अक्षर ज्ञान, गणित के सूत्रों या डिग्रियां प्राप्त करने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह मनुष्य के अंतःकरण को प्रज्वलित करने वाली वह दिव्य ज्योति है जो भीतर के हर कोने को रोशन कर देती है।

अज्ञान और अंधकार केवल रोशनी का अभाव नहीं है, बल्कि यह चेतना का वह स्तर है जहाँ मनुष्य भय, संकीर्णता, रूढ़ियों और कुप्रथाओं की बेड़ियों में जकड़ा रहता है। जब तक समाज में शिक्षा का प्रकाश नहीं पहुँचता, तब तक अज्ञानता व्यक्ति की निर्णय शक्ति को कुंद कर देती है। इतिहास गवाह है कि जब-जब समाज में अंधविश्वास और कुरीतियां हावी हुईं, तब-तब मानवीय विकास की गति अवरुद्ध हुई। यह अंधकार व्यक्ति को उसकी वास्तविक शक्तियों और क्षमताओं से अनजान रखता है। वह अपनी हीनभावना और सीमाओं के दायरे में घुटता रहता है। इस गहरे अंधकार को चीरकर व्यक्ति को उसकी वास्तविक पहचान दिलाने का कार्य केवल शिक्षा ही कर सकती है।

इसके विपरीत, शिक्षा का प्रकाश वह संजीवनी है जो व्यक्ति के भीतर दबे हुए बोध को जगाती है। यह प्रकाश हमें सही और गलत, सत्य और असत्य, न्याय और अन्याय के बीच का अंतर समझाता है। शिक्षा हमारे सोचने के दायरे को विस्तृत करती है। जब एक बालक विद्यालय की देहरी पर कदम रखता है और वर्णमाला से लेकर विज्ञान के जटिल सिद्धांतों तक की यात्रा तय करता है, तो वह केवल ज्ञान ही अर्जित नहीं कर रहा होता, बल्कि वह अपने मस्तिष्क के बंद दरवाजों को खोल रहा होता है। शिक्षा मनुष्य को स्वतंत्र विचारक बनाती है। यह उसे यह सिखाती है कि किसी भी बात को आंख मूंदकर स्वीकार करने के बजाय उसे तर्क और विवेक की कसौटी पर कैसे परखा जाए। यही विवेक समाज से संकीर्णता को मिटाकर उदारता, सहिष्णुता और भाईचारे की स्थापना करता है।

इस पूरी यात्रा में एक शिक्षक की भूमिका उस दीप के समान होती है जो खुद जलकर दूसरों के मार्ग को रोशन करता है। एक शिक्षक केवल पाठ्यक्रम पूरा नहीं कराता, बल्कि वह बच्चों की आँखों में बड़े सपने बुनना और उन्हें साकार करने का साहस सिखाता है। विद्यालय का वह प्रांगण, जहाँ ककहरा सीखा जाता है, वास्तव में राष्ट्र निर्माण की सबसे पहली प्रयोगशाला है। जब शिक्षक बच्चों के मन में जिज्ञासा का बीज बोता है, तो वही बीज आगे चलकर बड़े वैज्ञानिक, विचारक, साहित्यकार और एक जिम्मेदार नागरिक का रूप लेता है। यह ज्ञान का हस्तांतरण पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलने वाला वह महान यज्ञ है, जिससे मानवता निरंतर पोषित होती रहती है।

शिक्षा का यह प्रकाश केवल एक व्यक्ति तक सीमित नहीं रहता, बल्कि इसकी किरणें पूरे समाज और राष्ट्र को आलोकित करती हैं। जिस देश के नागरिक शिक्षित और विवेकशील होते हैं, वह राष्ट्र प्रगति



के पथ पर अनवरत आगे बढ़ता है। शिक्षा व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाती है, उसे अपने अधिकारों के प्रति सजग करती है और कर्तव्यों के प्रति निष्ठावान बनाती है। यह गरीबी, बेरोजगारी और असमानता जैसी सामाजिक समस्याओं के विरुद्ध सबसे बड़ा हथियार है। एक शिक्षित युवा अपने परिवार का संबल बनता है और अपने समाज के लिए प्रेरणास्रोत बनता है।

अंततः, शिक्षा महज साक्षरता का दूसरा नाम नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने की कला और संस्कारों की वह धारा है जो हर हृदय को पावन कर देती है। यह अंधकार के कितने भी घने बादलों को चीरकर उम्मीद का नया सूरज उगाने की क्षमता रखती है। अज्ञान के अंधकार से ज्ञान के प्रकाश की यह यात्रा ही मानवता की सच्ची पहचान है। आइए, हम सब मिलकर शिक्षा का यह दीप जलाए रखें, ताकि समाज का कोई भी कोना अज्ञान के साये में न रहे, क्योंकि सपनों के कैन्वस पर कर्म के रंग भरने और सफलता की इबारत लिखने के लिए शिक्षा ही एकमात्र अचूक माध्यम है।



अंशुल गुप्ता (स०अ०)

संविलियन विद्यालय डेरा करीमनगर
विकास खंड- राजपुर, जनपद- कानपुर देहात





टीएलएम का नाम- अंग्रेजी भाषा में स्वरों (Vowels) की पहचान

कक्षा/स्तर- यह टीएलएम विशेषकर कक्षा 5 के बच्चों हेतु बनाया गया है।

प्रयुक्त सामग्री- गत्ता, काला चार्ट, A4 साइज रंगीन पेपर, रंगीन मार्कर, स्केच आदि।

निर्माण विधि- घर में बचे हुए वेस्ट मैटेरियल गत्ते को काटकर उसमें काला चार्ट फेविकोल की सहायता से चिपका दिया फिर रंगीन A4 साइज पेपर से फूल और गमले बनाकर उसमें सभी वोवल्स को रंगीन मार्कर से बनाकर टीएलएम तैयार किया।

उपयोग- बच्चों को अंग्रेजी भाषा के स्वरों की पहचान कराने में ये टीएलएम मदद करता है, बच्चे आसानी से खेल-खेल में सीख सकते हैं।



टीएलएम निर्माणकर्ता

हिमानी गुप्ता (सोअओ)

संविलियन विद्यालय राजपुर

विठ्ठल - राजपुर, जनपद- कानपुर देहात





बच्चों द्वारा हस्तनिर्मित अखबार का निर्माण

आवश्यक सामग्री- चार्ट पेपर, रंगीन पेपर, रंगीन टेप, फेविकोल तथा रंग आदि।
क्रियान्वयन की विधि- बच्चों से उस माह विशेष में होने वाली गतिविधियों का संकलन कराना तथा बच्चों द्वारा निर्मित चित्र, कहानी, कविता, लेख आदि को संकलित करते हुए आकर्षक अखबार का संपादन करना। इस मासिक अखबार को प्रत्येक माह के अंत में प्रार्थना सभा में अन्य बच्चों द्वारा वाचन कराना।

नवाचार की उपयोगिता-

- 1- रचनात्मकता का विकास
- 2- लेखन कौशल में सक्षम
- 3- पठन कौशल में सक्षम
- 4- जानकारी जुटाने में सक्षम
- 5- अभिव्यक्ति कौशल का विकास
- 6- समूह में कार्य करने की क्षमता का विकास
- 7- निर्णय लेने की क्षमता का विकास
- 8- कलात्मक कौशल का विकास
- 9- आत्मविश्वास- अपनी बनाई सामग्री को दूसरों के सामने प्रस्तुत करने से आत्मविश्वास में वृद्धि।



श्रीमती वन्दना सिंह

सहायक अध्यापक

कम्पोजिट विद्यालय बंसहिया

विकास क्षेत्र - गौरी बाजार, जनपद- देवरिया





माँ सी कोमल हृदय शिक्षिकाएँ

शिक्षा किसी भी समाज या राष्ट्र की उन्नति और प्रगति की मुख्य आधारशिला है। शिक्षा ही वह जलता हुआ दीप है जो मानव जीवन के अंधकार को अपने प्रकाश से मिटाता है। केवल मानव ही ईश्वर की वह रचना है जो शिक्षा के अर्थ को और उसके महत्व को समझ सकता है और जीवन में उसे आत्मसात कर आगे बढ़ सकता है।

शिक्षक होना ही अपने आप में एक गौरव का विषय है लेकिन उसमें भी जब बात महिला शिक्षकों की आती है तो उनका योगदान और भी महत्वपूर्ण विशेष और सराहनीय हो जाता है। क्योंकि महिला (नारी) वो शक्ति है जो अपने अंदर अदम्य शक्ति, साहस, धैर्य और क्षमताओं को छुपा कर रखती है और सही मौका आने पर उनका सदुपयोग करती है। हम महिला शिक्षकों की भूमिका और उनके महत्व को और भी कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं के द्वारा अच्छे रूप से समझ सकते हैं :-

1. माँ के आँचल जैसा साया- मैं स्वयं एक शिक्षिका हूँ और एक माँ भी हूँ, जैसा कि मैंने अपने जीवन में स्वयं ही अनुभव किया है कि जब हम अपने विद्यालय के बच्चों के साथ मित्रवत व्यवहार करते हैं, उनका माँ की तरह ही लालन-पालन और उनका ख्याल रखते हैं तो बच्चे हमें अपनी माँ के ही रूप में समझने लगते हैं। यह बिल्कुल सत्य है, मेरे साथ यह बहुत बार घटित हुआ है, जब मैं अपने बच्चों को जब पढ़ाती हूँ तो वह मेरे साथ इतने खुश रहते हैं कि वह यही भूल जाते हैं कि वो अपनी मैम से बात कर रहे हैं या माँ से। पढ़ते-पढ़ते अचानक ही वह आए दिन मुझे मम्मी बोल जाते हैं और टोकने के बाद जब उन्हें याद आता है तो फिर सॉरी बोलकर हँस भी देते हैं। उनकी इन निश्छल भावनाओं से सच बताऊँ मैं भी बहुत खुश होती हूँ, मुझे उनकी आँखों में जो चमक और खुशी दिखती है उस खुशी को केवल एक माँ ही समझ सकती है; इसलिए महिला शिक्षक एक माँ के रूप में अपने आँचल का साया अपने विद्यालय के बच्चों के सर पर भी हमेशा बनाए रखती है।

2. सच्ची मार्गदर्शक- जब ये नन्हें और मासूम बच्चे कभी-कभी कहीं भटकते हैं या असमंजस की स्थिति में होते हैं तब शिक्षिका ही उन्हें सही मार्गदर्शन देकर जीवन की सच्ची राह दिखाती हैं और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती हैं।

3. संस्कारों की कुंजी- इस बात का तो इतिहास भी गवाह है की किसी भी बालक की पहली पाठशाला उसकी माँ होती है और वह माँ के ही संस्कारों से प्रेरित होकर अपने जीवन को दिशा प्रदान करता है। माँ बचपन से ही अपने बच्चों के अंदर जैसे संस्कार पिरो देती है बच्चे का जीवन और उसका भविष्य उसके उन्हीं संस्कारों से परिलक्षित होता है।

4. संवेदनशील- यह सत्य है कि पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं का हृदय अति कोमल, सहज और सरल होता है और वह बहुत ही जल्दी भावुक भी हो जाती हैं। यही कारण है कि जब महिला शिक्षक चाहे



वह घर में माँ की तरह हो या विद्यालय में एक शिक्षिका की तरह अगर उनके बच्चों पर जरा सी भी कोई चोट, खरोंच या कष्ट आ जाता है तो बहुत जल्दी विचलित हो जाती हैं, भावुक हो जाती हैं, संवेदनशील हो जाती हैं और इसी कोमल संवेदना के कारण वे अपने बच्चों की सच्चे हृदय से रक्षा करती हैं।

5. धैर्यवान- जब बच्चे बार-बार सिखाने के बाद भी अनेक गलतियाँ करते हैं तो यह एक महिला शिक्षक का ही गुण है कि वह इतनी धैर्यवान होती है कि अपने बच्चों की सभी कमियों को देखते हुए भी उन्हें बार-बार समझाती है और उन्हें सही करते हुए उनका मार्गदर्शन करती है।

6. नवाचारी- आज के वर्तमान समय में महिलाओं द्वारा किए गए अनेक नवाचारों से कोई भी अछूता नहीं रह गया है। आज शिक्षिकाएं अपने स्वयं के अनेक प्रयासों और नवाचारों से अपना सबसे अच्छा प्रदर्शन देने का प्रयास करती हैं। वे विद्यालय की विषयवस्तु को जब पढ़ाती हैं तो यह कोशिश करती हैं कि वह उसे और कितने अच्छे रूप में प्रस्तुत कर सकें कि बच्चे उसे आसानी से समझ सकें और आत्मसात कर सकें। यही कारण है कि आज हमारी महिला शिक्षकों के नवाचार दिन-प्रतिदिन चलन में बढ़ते ही जा रहे हैं और उनकी सराहना भी की जा रही है।

7. प्रेरणा के रूप में- प्रत्येक बच्चा अपनी एक अनोखी पहचान लेकर जन्म लेता है और हर बच्चे में अपनी एक अलग ही क्षमता होती है। जरूरी नहीं कि सभी बच्चे एक समान हों, यही कारण है कि कभी-कभी जब शिक्षिका अपने बच्चों को एक साथ एक ही कक्षा में पढ़ाती है तो कुछ बच्चे बहुत अच्छा प्रदर्शन करते हैं तो कुछ कम कर पाते हैं, लेकिन जो बच्चे खुद को कमजोर महसूस करते हैं या कार्य को नहीं कर पाते हैं, उनका मनोबल गिरता है तब एक आदर्श शिक्षिका उनकी प्रेरणा बनकर उनके आगे खड़ी होती है और उनको बार-बार प्रेरित करके उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करती है।

8. आदर्श के रूप में- यूं तो अधिकांश बच्चे सामान्य रूप से जीवन यापन करते हैं लेकिन कभी-कभी कुछ बच्चों के मन में कुछ महान और बड़ा करने की इतनी प्रबल इच्छा जागृत हो जाती है कि वो यह सोचते हैं कि वह ऐसा क्या कार्य करें जिससे कि वह इस दुनिया में अपना नाम रोशन कर सकें। उनका यही विचार उन्हें एक आदर्श को खोजने पर मजबूर करता है और तब बच्चे अपने जीवन में जिस किसी से भी ज्यादा प्रभावित होते हैं उसे अपने आदर्श के रूप में मानने लगते हैं और उसके जैसा ही व्यवहार करने लगते हैं। इस वजह से कुछ बच्चे अपने आदर्श लोगों का अनुसरण करते हुए स्वयं भी आदर्श बनते हैं और जग में नाम रोशन करते हैं।



9. जिम्मेदार नागरिक के रूप में- एक महिला का एक साथ अनेक रूपों में कार्य करना कोई मामूली बात नहीं है। अधिकांश महिलाएं ऐसी होती हैं जो एक साथ घर, परिवार और बाहर की सामाजिक जिम्मेदारियाँ बखूबी निभाती हैं और एक चुनौतियों से भरा आदर्श जीवन व्यतीत करती हैं। हम कह सकते हैं कि महिला शिक्षक होना भी कोई सरल बात नहीं है क्योंकि महिला होने के नाते उन्हें सुबह जल्दी उठकर अपने परिवार की सभी जिम्मेदारियों को निभाना पड़ता है और फिर स्कूल में जाकर शिक्षक का कर्तव्य भी निर्वहन करती हैं।

10. जागरूक नागरिक के रूप में- अब वह समय निकल चुका है जब महिलाएं एक ही चहारदीवारी में कैद होकर अत्याचार सहन करती थीं और अपनी भावनाओं का दमन करती थीं। शिक्षा के कारण ही आज महिलाओं में यह बहुत बड़ा बदलाव आया कि उन्होंने अपनी क्षमताओं, अपनी काबिलियत को पहचानना शुरू किया और जो भी उनके सपने थे उन्हें पूरा करने के लिए जी जान लगा दी।

आज भी अनेक विरोधी उसे आगे बढ़ने से रोकने का प्रयास करते हैं लेकिन फिर भी वे अपनी सभी चुनौतियों को पार करती हुई आगे बढ़ने का प्रयास करती हैं और जीवन में सफलता हासिल करती हैं।

निष्कर्ष- अंत में मैं यही कह सकती हूँ कि आज महिलाएं केवल एक ही क्षेत्र में नहीं अपितु दुनिया के चारों कोनों में अपनी योग्यता, क्षमता और प्रतिभाओं के कारण चहुँमुखी विकास कर रही हैं और इस समाज और राष्ट्र को एक सुंदर, सार्थक और सकारात्मक रूप प्रदान कर रही हैं।

महिला नहीं है अबला अब सबला रूप दिखा रही, दुनियाँ के कोने-कोने में अपना जलवा फैला रही।

महिलाओं ने किया साबित, उनसे अच्छा कोई शिक्षक नहीं

बेटियों की शिक्षा को समर्पित ममताश दुहुण, खुद ही घर-घर जाकर कराया विद्यालय में दाखिला

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस (8 मार्च)

जामरुंग संवाददाता, बामपतः अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर ऐसी महिलाओं से कथकल करते हैं जो शिक्षा के क्षेत्र में नित नए आयाम स्थापित कर रही हैं। एक शिक्षिका तो ऐसी हैं जिन्होंने राजकीय कालेज में दाखिले के लिए घर-घर जाकर बेटियों के स्वजन को मनमन्यवल की। उनकी बदौलत आज बेटियाँ विद्यालय में पहुँचकर अपने भविष्य की योजना तैयार कर रही हैं। ये परिपटीय विद्यालय की शिक्षिकाओं को मेहनत और लगन भी कुछ कम नहीं है। खेल-खेल में शिक्षित बना रही सुनीता पोद्म श्री प्राथमिक विद्यालय धनौर नंबर-1 में सहायक अध्यापिका सुनीता ने बचपन के सपने को सकार किन्ना। सुनीता बताती हैं कि उसका सपना था कि शिक्षक बनकर बच्चों का भविष्य उज्जवल करें। यह सपना सकार हो रहा है।

बच्चों को पढ़ाई के साथ खेलकूद, योग और स्क्राइटिंग के बारे में बताती हैं। बच्चों के साथ खेलकूद की गतिविधियों में प्रतिभाग कराकर उनका मनोबल बढ़ा रही हैं। बेटियों को गुड



प्राथमिक विद्यालय धनौर में शिक्षिका को खेल क्रिडाती शिक्षित सुनीता से सख

टच और वेड टच के बारे में जागरूक दिया। खेल-खेल में विद्यार्थियों को करती हैं। अल्प सुरक्ष का प्रतिक्षण शिक्षित बना रही हैं।

ममताश की मेहनत से बना शिक्षा का मंदिर

मुस्लिम बहुल्य टाडम में बेटियों की शिक्षा निम्न स्तर पर थी। राजकीय माडल

बालिका इंटर कालेज का निर्माण हुआ था। वर्ष 2023 के माई में मान्यता हुई और जुलाई माह में विद्यालय शुरू हुआ।

खास पर प्रभारी प्रहानावार्थ के रूप में ममताश दुहुण को जिम्मेदारी दी गई। खास एक भी लड़की का दाखिला नहीं था। उन्होंने बताया कि गांव में घर-घर जाकर स्वजन से मिलीं। बेटियों का दाखिला करने का अमुरोष किया। उनका यह प्रयास रंग लगा। वर्तमान में 72 बेटियाँ कक्षा नौ से लेकर 12वीं तक पढ़ाई कर रही हैं। उन्होंने बताया कि शासन से विद्यालय को किसी तरह की सहायता नहीं है। दो साल में 50 हजार रुपये विद्यालय में खर्च कर चुकी हैं। जिस समय विद्यालय शुरू हुआ तब दो शिक्षक थे। अपने वेतन से अंगीजी शिष्य पढ़ाने के लिए एक शिक्षिका को भी रखा था। अब मेहनत रंग लाई और लोग जागरूक हुए तो बेटियों का दाखिला करा रहे हैं।

रीना ने विद्यार्थियों को किया निपुण, बेटियों को दे रही सुरक्षा कवच

पौरम भी उच्च प्राथमिक विद्यालय कपोजिट संकुल अच्यारक रीना के प्रयास से विद्यालय काडल बना। रीना ने बताया कि विद्यालय का सकार एक सहायक और

सबसे जुमियर शिक्षिका के तौर पर शुरू हुआ था। तब इस विद्यालय की इतनी विशेष प्दवान नहीं थी। उस दौरान वह प्रभारी प्रहानावार्थिका के पद रही। प्रयास किया तो विद्यालय अंगीजी माध्यम में चला गया। निपुण भारत मिशन बला तो विद्यार्थियों को निपुण बनाने का जिम्मा मिला, उसमें भी मेहनत से कार्य किया। आज विद्यालय निपुण है। इससे साथ उन्होंने पाली के प्राथमिक विद्यालय व सिस्सना गांव का प्राथमिक विद्यालय नंबर दो को भी निपुण बनाया। सेवकी विद निपुण भी उनके प्रयास से शुरू हुआ। बेटियों को अल्प रक्षा का प्रशिक्षण देकर उनका सुरक्षा कवच बनी। मिशन शक्ति में अल्प कार्य करने पर सम्मानित किया गया।

श्रीमती गरिमा वाघोय

(सहायक अध्यापक)

प्राथमिक विद्यालय कलवारी

नगर क्षेत्र- हाथरस, जनपद- हाथरस

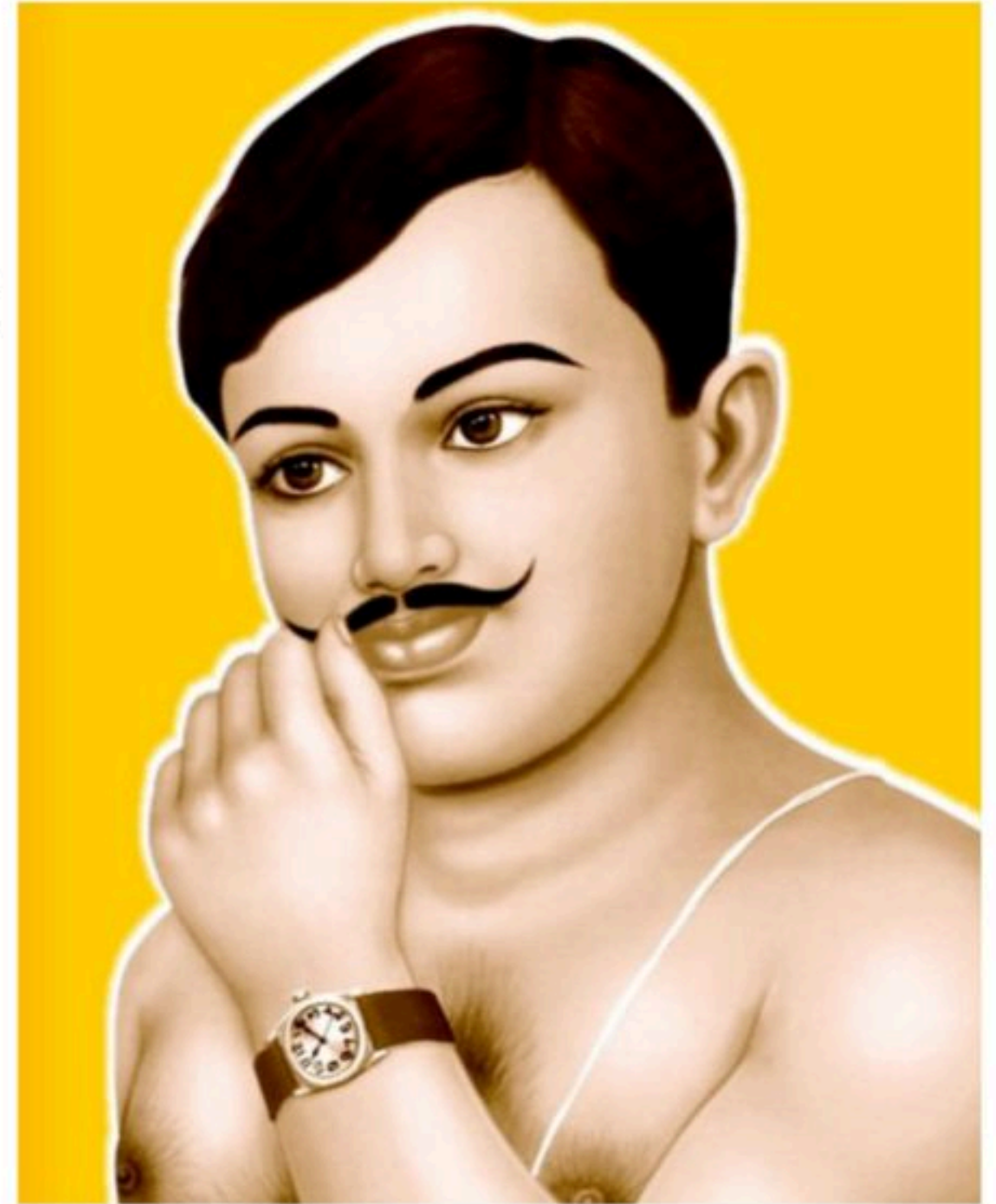




चन्द्रशेखर आजाद

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महानायक चंद्रशेखर आजाद का जीवन अदम्य साहस, देशभक्ति और कभी न झुकने वाले स्वाभिमान का प्रतीक हैं। उनके जीवन से जुड़े प्रेरक प्रसंग निम्नलिखित हैं-

प्रेरक प्रसंग 1 :- उस समय का है जब वे मात्र 15 वर्ष के थे। सन 1921 में महात्मा गांधी के 'असहयोग आंदोलन' की लहर पूरे देश में फैली हुई थी। बनारस में पढ़ाई कर रहे 15 वर्षीय बालक चंद्रशेखर भी देशप्रेम से ओत-प्रोत होकर इस आंदोलन में कूद पड़े। जुलूस में 'भारत माता की जय' का नारा लगाने के कारण पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। अगले दिन उन्हें न्यायालय में मजिस्ट्रेट मिस्टर पारकर के सामने पेश किया गया। मजिस्ट्रेट ने बेहद कठोरता से इस छोटे से बालक से सवाल पूछने शुरू किए :-



मजिस्ट्रेट : "तुम्हारा नाम क्या है?"

बालक : "आजाद!"

मजिस्ट्रेट (क्रोध में) : "तुम्हारा बाप कौन है?"

बालक : "स्वतंत्रता!"

मजिस्ट्रेट : "तुम्हारा घर कहाँ है?"

बालक : "जेलखाना!"

बालक का यह बेखौफ और दृढ़ उत्तर सुनकर मजिस्ट्रेट तिलमिला उठा। उसने उस 15 साल के बालक को 15 कोड़े लगाने की अमानवीय सजा सुनाई।

उस समय की सजा के नियमानुसार बालक को नग्न करके टिकठी से बाँध दिया गया।

जब-जब जल्लाद की भारी चमड़े की चाबुक उनकी नंगी पीठ पर पड़ती, मांस फट जाता और खून की धार बह निकलती। लेकिन हर कोड़े की चोट के साथ बालक चंद्रशेखर के मुख से कोई चीख नहीं, बल्कि पूरे गर्व से केवल एक ही हुंकार निकलती थी- "भारत माता की जय!"

15 कोड़े सहने के बाद भी उनके चेहरे पर कोई शिकन नहीं थी। जेल से बाहर आने पर काशी के लोगों ने इस नन्हें वीर को कंधों पर उठा लिया और फूलों की मालाओं से लाद दिया।



इसी घटना के बाद से उनका नाम हमेशा के लिए 'चंद्रशेखर आजाद' पड़ गया।

सीख :- चंद्रशेखर आजाद का यह प्रसंग हमें सिखाता है कि देशप्रेम और अपने सिद्धांतों के प्रति निष्ठा की कोई उम्र नहीं होती। यदि मन में साहस, संकल्प और अपने देश के प्रति स्वाभिमान हो, तो बड़ी से बड़ी शारीरिक पीड़ा और मुश्किल परिस्थिति भी इंसान को उसके लक्ष्य से नहीं डिगा सकती।

प्रसंग 2 :- आखिरी गोली तक की कसम

आजाद ने एक प्रतिज्ञा ली थी- अंग्रेज मुझे कभी जिंदा नहीं पकड़ पाएंगे।

27 फरवरी 1931 को इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में वे अपने साथी सुखदेव राज से मिलने आए थे।

किसी मुखबिर ने पुलिस को खबर दे दी। देखते ही देखते पूरा पार्क अंग्रेज पुलिस ने घेर लिया।

आजाद अकेले थे, पर उन्होंने हार नहीं मानी। दोनों हाथों से पिस्तौल चलाते रहे। जब उनकी पिस्तौल में सिर्फ एक गोली बची, तो उन्होंने वह गोली खुद को मार ली। अपनी कसम पूरी की।

कहते हैं उस दिन उनकी पिस्तौल से निकली गोलियों की आवाज से अंग्रेज भी थर-थर कांप रहे थे।

सीख :- देशभक्ति सिर्फ नारा नहीं, आखिरी सांस तक निभाया गया वचन है।

प्रसंग 3 :- जंगल में भी अनुशासन

आजाद अक्सर झांसी के जंगलों में अपने दल के साथ रहते थे। एक बार उनके साथी भूख से परेशान थे। एक साथी ने पास के गांव से बिना बताए कुछ खाने का सामान ले लिया।

आजाद को पता चला तो बहुत नाराज हुए। उन्होंने कहा- "हम डाकू नहीं, क्रांतिकारी हैं। हम अंग्रेजों से लड़ रहे हैं, अपनी जनता को लूटने के लिए नहीं।" और उन्होंने उसी साथी से सामान वापस करवाया और पैसे देकर मंगवाया।

सीख :- लक्ष्य कितना भी बड़ा क्यों न हो, रास्ता हमेशा ईमानदारी का ही होना चाहिए।

आजाद जी का जीवन हमें सिखाता है कि स्वतंत्रता भीख में नहीं मिलती, उसे छीनना पड़ता है और उसके लिए खुद को आजाद रखना पड़ता है- डर से, स्वार्थ से और गुलामी की सोच से।

नरेन्द्र नाथ पटेल (स०अ०)

कम्पोजिट विद्यालय मुरहन

विकास क्षेत्र- भदोही, जनपद- भदोही





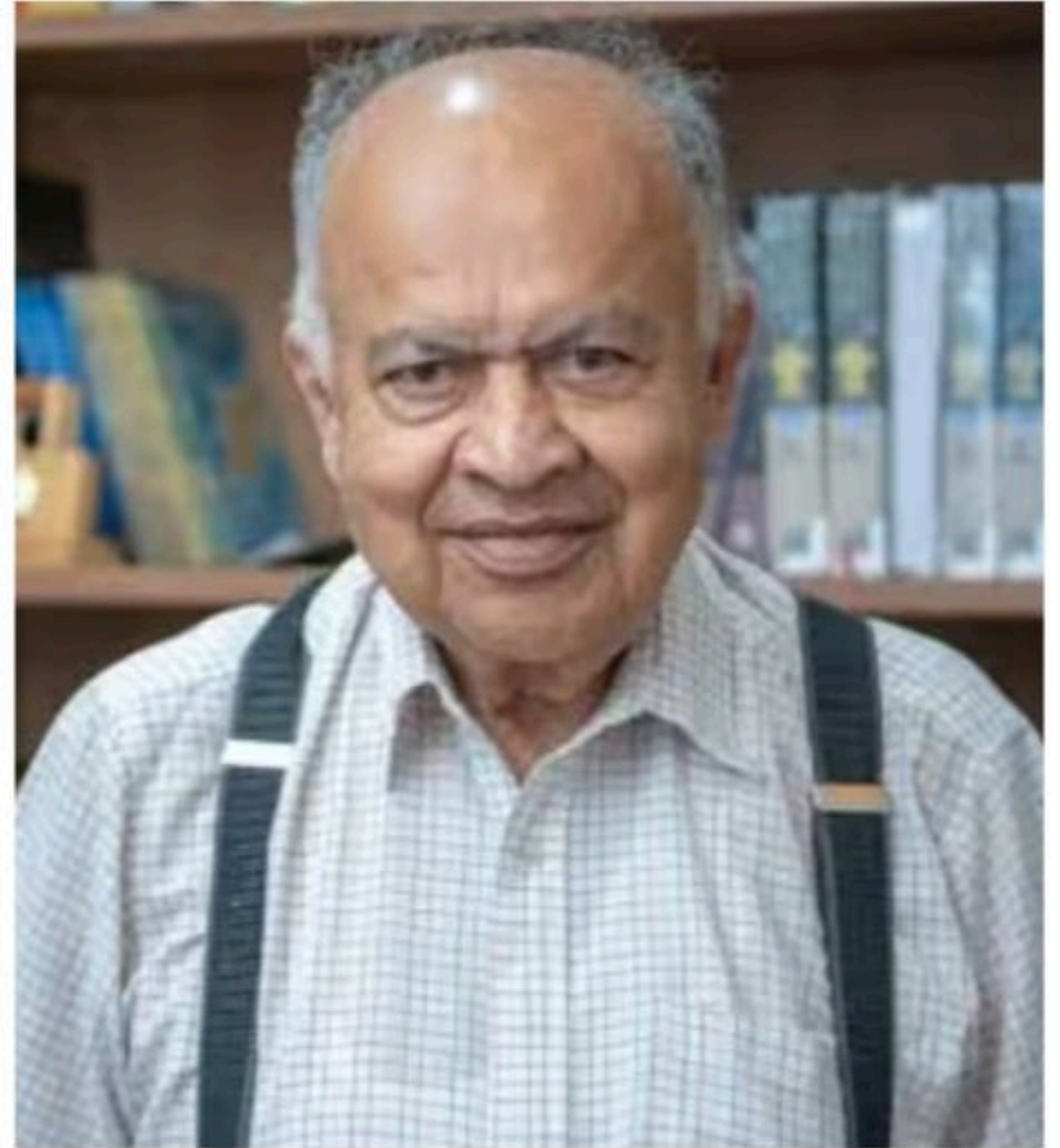
जयंत विष्णु नालीकर के विचार

जयंत विष्णु नालीकर भारत के प्रसिद्ध खगोलशास्त्री, भौतिक विज्ञानी, लेखक और विज्ञान-प्रचारक थे। उन्होंने ब्रह्मांड, गुरुत्वाकर्षण और खगोल विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया तथा विज्ञान को आम लोगों और विद्यार्थियों तक पहुँचाने में भी विशेष योगदान दिया। उनका जीवन इस बात का प्रेरक उदाहरण है कि जिज्ञासा, तर्क, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और निरंतर अध्ययन से ज्ञान की नई दिशाएँ खोजी जा सकती हैं।

विज्ञान के प्रति जिज्ञासा :- नालीकर का मानना था कि किसी भी वैज्ञानिक खोज की शुरुआत प्रश्न पूछने से होती है। बच्चों और युवाओं में यदि अपने आसपास की घटनाओं को समझने की विज्ञान को केवल किताबों का विषय न मानकर जीवन को समझने का माध्यम बना सकते हैं। आकाश में दिखाई देने वाले तारे, ग्रह, सूर्य और आकाशगंगाएँ हमेशा से मानव की जिज्ञासा का विषय रहे हैं। नालीकर ने इसी जिज्ञासा को वैज्ञानिक सोच से जोड़ने का प्रयास किया।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तर्कशीलता :- जयंत नालीकर के विचारों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विशेष महत्व था। वे मानते थे कि किसी भी बात को केवल इसलिए स्वीकार नहीं करना चाहिए कि वह लंबे समय से कही या मानी जाती रही है। किसी विचार को समझने के लिए प्रमाण, तर्क और परीक्षण आवश्यक हैं। उनका जीवन विद्यार्थियों को यह सीख देता है कि प्रश्न पूछना गलत नहीं है। बल्कि सही प्रश्न ही ज्ञान की दिशा खोलते हैं। विज्ञान हमें सिखाता है कि हम किसी निष्कर्ष तक पहुँचने से पहले उसके पीछे के प्रमाणों को समझें।

ब्रह्मांड को समझने की कोशिश :- नालीकर का प्रमुख कार्य खगोल विज्ञान और ब्रह्मांड विज्ञान से जुड़ा रहा। उन्होंने प्रसिद्ध वैज्ञानिक फ्रेड हॉयल के साथ मिलकर ब्रह्मांड के स्वरूप और गुरुत्वाकर्षण से संबंधित सिद्धांतों पर कार्य किया। उनका वैज्ञानिक जीवन इस बात का उदाहरण है कि ब्रह्मांड जैसे विशाल विषय को समझने के लिए कल्पना के साथ-साथ गणित, भौतिकी और तार्किक विश्लेषण की आवश्यकता होती है। उन्होंने ब्रह्मांड की उत्पत्ति और उसकी प्रकृति से जुड़े वैज्ञानिक प्रश्नों पर स्वतंत्र विचार प्रस्तुत किए। उनके कार्यों ने ब्रह्मांड विज्ञान के क्षेत्र में वैज्ञानिक बहस और विचार-विमर्श को समृद्ध किया।



विद्यार्थियों के लिए उनका संदेश :- नालीकर का व्यक्तित्व विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से प्रेरणादायक है। उनका जीवन बताता है कि विद्यार्थी को केवल परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए नहीं, बल्कि समझने और खोजने के लिए पढ़ना चाहिए।

विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच विकसित करने के लिए आवश्यक है कि वे—
हर विषय को समझने की कोशिश करें।

बिना प्रमाण किसी बात को अंतिम सत्य न मानें।

प्रश्न पूछने से न डरें।

पुस्तकों और विश्वसनीय स्रोतों से ज्ञान प्राप्त करें।

प्रयोग और निरीक्षण की आदत विकसित करें।

असफलता से निराश न होकर उससे सीखें।

नई चीजों को जानने की जिज्ञासा बनाए रखें।

शिक्षा और समाज के लिए विचार :- नालीकर के विचारों का व्यापक संदेश शिक्षा के क्षेत्र में भी दिखाई देता है। शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि सोचने, प्रश्न करने और समस्याओं का समाधान खोजने की क्षमता विकसित करना होना चाहिए। आज के समय में जब इंटरनेट और सोशल मीडिया के माध्यम से बहुत-सी सूचनाएँ तेजी से फैलती हैं, तब वैज्ञानिक दृष्टिकोण और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। किसी सूचना को तुरंत सच मानने के बजाय उसके स्रोत और प्रमाण की जाँच करना आवश्यक है। यही वैज्ञानिक सोच हमें सही और गलत जानकारी में अंतर करने में सहायता करती है।

नालीकर के विचारों से मिलने वाली प्रेरणा :- जयंत विष्णु नालीकर का जीवन हमें अनेक महत्वपूर्ण संदेश देता है।

पहला संदेश है— जिज्ञासु बनिए।

दूसरा है— तर्क और प्रमाण को महत्व दीजिए।

तीसरा है— ज्ञान को समाज तक पहुँचाइए।

चौथा है— लगातार सीखते रहिए।

उनकी वैज्ञानिक यात्रा यह भी बताती है कि किसी कठिन विषय को समझने के लिए धैर्य और निरंतर प्रयास आवश्यक है। ब्रह्मांड जैसे विशाल और जटिल विषय पर कार्य करने के लिए जिस प्रकार गहन अध्ययन और धैर्य की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार जीवन की समस्याओं को हल करने के लिए भी हमें शांत मन से सोचने और सही रास्ता खोजने की जरूरत होती है।



जयंत विष्णु नार्लीकर का जीवन भारत की वैज्ञानिक परंपरा की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। उन्होंने खगोल विज्ञान और ब्रह्मांड विज्ञान में योगदान देने के साथ-साथ समाज में वैज्ञानिक चेतना फैलाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। उनके विचार हमें सिखाते हैं कि ज्ञान की कोई सीमा नहीं होती और प्रश्न पूछने की कोई उम्र नहीं होती।

आज के विद्यार्थियों के लिए उनका जीवन विशेष प्रेरणा का स्रोत है। यदि हम उनके वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रेरणा लेकर जिज्ञासा, तर्क, अध्ययन, प्रयोग और निरंतर सीखने को अपने जीवन का हिस्सा बनाएँ, तो हम न केवल अपने ज्ञान को बढ़ा सकते हैं, बल्कि समाज और देश के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

“प्रश्न पूछिए, प्रमाण खोजिए, तर्क से सोचिए और ज्ञान को आगे बढ़ाइए—यही वैज्ञानिक दृष्टिकोण की सच्ची पहचान है।”

रविन्द्र कुमार पटेल (स०अ०)

पी० एम० श्री उच्च प्राथमिक विद्यालय झौआ

वि० ख०- औराई, जनपद- भदोही





फोटोमैथ (Photomath)

फोटोमैथ (Photomath) दुनिया का सबसे लोकप्रिय गणित सिखाने वाला ऐप है। इसे लाखों छात्र, अभिभावक और शिक्षक इस्तेमाल करते हैं।

फोटोमैथ क्या है?

यह एक मोबाइल ऐप है जो आपके फोन के कैमरे से गणित के सवाल की फोटो लेकर तुरंत उसका हल बता देता है। आपको सिर्फ सवाल पर कैमरा लगाना है, ऐप खुद सवाल को पढ़ता है और स्टेप-बाय-स्टेप समाधान देता है।

कंपनी ने इसे 2014 में बनाया था, और 2023 में इसे Google ने खरीद लिया था, इसलिए अब इसकी तकनीक और भी बेहतर हो गई है।

यह कैसे काम करता है?

1. स्कैन करें :- किताब, नोटबुक या स्क्रीन पर लिखे गणित के सवाल की फोटो लें।
2. पहचानें :- ऐप की AI और OCR तकनीक हाथ से लिखे हुए सवाल को भी पढ़ लेती है।
3. हल देखें :- तुरंत उत्तर के साथ-साथ पूरा तरीका, ग्राफ और अलग-अलग मेथड से हल देखने को मिलता है।

मुख्य फीचर्स

- तुरंत समाधान :- बेसिक जोड़-घटाव से लेकर कैलकुलस, ट्रिग्नोमेट्री, स्टैटिस्टिक्स तक।
- स्टेप-बाय-स्टेप समझाना :- सिर्फ उत्तर नहीं, हर स्टेप क्यों किया गया है, इसका लॉजिक भी बताता है।
- कई तरीके :- एक ही सवाल को कई तरीकों से हल करके दिखाता है।
- ग्राफिकल कैलकुलेटर :- ग्राफ बनाकर समझाता है।
- एनिमेटेड ट्यूटोरियल :- मुश्किल स्टेप्स को एनिमेशन से समझाता है।
- ऑफलाइन भी काम करता है :- एक बार डाउनलोड करने के बाद बिना इंटरनेट के भी बेसिक सवाल हल कर सकते हैं।
- 30+ भाषाओं में :- हिंदी और अंग्रेजी सहित कई भाषाओं में उपलब्ध है।



मुख्य लाभ

1. छात्रों के लिए :-

- होमवर्क में तुरंत मदद मिलती है, ट्यूशन पर निर्भरता कम होती है।
- रटने की बजाय समझ विकसित होती है क्योंकि हर स्टेप की वजह पता चलती है।
- परीक्षा की तैयारी तेज होती है, आप अपनी गलती कहाँ हुई यह तुरंत देख सकते हैं।

2. अभिभावकों के लिए :-

- अगर आप गणित में अपने बच्चे की मदद करना चाहते हैं तो यह सबसे आसान तरीका है। आपको खुद पूरा सवाल हल करने की जरूरत नहीं।
- बच्चे का आत्मविश्वास बढ़ता है क्योंकि उसे तुरंत फीडबैक मिलता है।

3. शिक्षकों के लिए :-

- अलग-अलग तरीकों से सवाल कैसे हल होता है, यह क्लास में दिखाने में मदद मिलती है।

4. सभी के लिए :-

- समय की बचत, 100% फ्री में बेसिक वर्जन उपलब्ध है, और प्रो वर्जन में डीप एक्सप्लेनेशन मिलता है।
- हाथ से लिखे नोट्स को भी पढ़ लेता है, जो दूसरे ऐप्स अक्सर नहीं कर पाते।

नरेन्द्र नाथ पटेल (सोओ)

कम्पोजिट विद्यालय सुरहन

विकास क्षेत्र- भदोही, जनपद- भदोही





गौरैया सी हम लड़कियाँ

हाँ गौरैया सी ही तो,
होती हैं हम लड़कियाँ।
बाबुल की देहरी पर फुदकती,
घर आँगन में सदा चहकती,
घर को सम्पूर्ण सा करती,
हाँ गौरैया सी ही तो,
होती हैं हम लड़कियाँ।



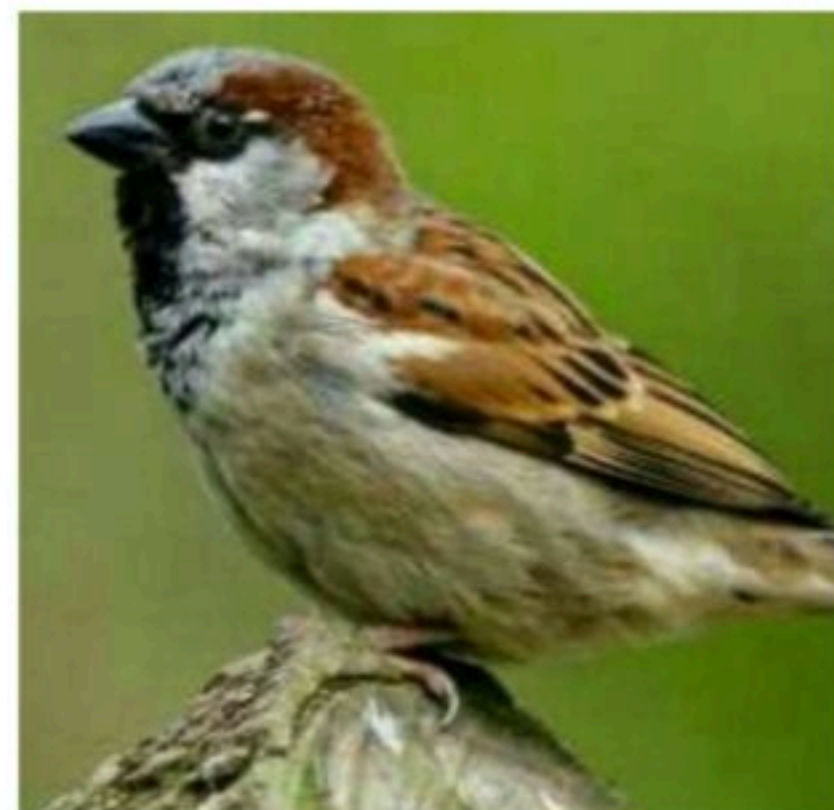
दूसरे घर की भी मर्यादा,
रखती प्रेम सभी से ज्यादा,
कुल की लक्ष्मी, जीवन आशा,
हाँ गौरैया सी ही तो,
होती हैं हम लड़कियाँ।

श्रीमती कविता श्रीवास्तव

सहायक अध्यापक

प्राथमिक विद्यालय पूरे दूलम

कुन्डा, प्रतापगढ़



चहक-चहककर गुंजित करती,
खुशियों की किलकारी भरती,
सबकुछ सहती, कुछ न कहती,
हाँ गौरैया सी ही तो,
होती हैं हम लड़कियाँ।



पिता की चौखट छोड़ चली जो,
हुई विलुप्त ज्यों जग से यह भी,
कहीं कुम्हला न उठे ये जीवन,
हाँ बिल्कुल गौरैया सी ही तो,
होती हैं हम लड़कियाँ।





सच्ची वीरता

यह कहानी सोनपुर गाँव के एक साधारण लेकिन साहसी बालक राजू की है। सोनपुर पहाड़ों के बीच बसा एक खूबसूरत गाँव था, जिसके पास से एक बड़ी नदी बहती थी। नदी के किनारे एक घना जंगल था। गाँव के सभी बच्चे नदी किनारे खेलने जाते थे, लेकिन उन्हें हमेशा चेतावनी दी जाती थी कि वे गहरे पानी या जंगल के अंदर अकेले न जाएं।

राजू 10 साल का एक फुर्तीला लड़का था। वह पढ़ाई में जितना होशियार था, दूसरों की मदद करने में उतना ही आगे रहता था।

एक दिन दोपहर के समय, राजू और उसके कुछ दोस्त नदी के किनारे खेल रहे थे। अचानक, मौसम बदल गया। आसमान में काले-काले बादल छा गए और मूसलाधार बारिश होने लगी। पहाड़ी इलाका होने के कारण देखते ही देखते नदी का पानी तेजी से बढ़ने लगा और गाँव के निचले हिस्सों में बाढ़ जैसी स्थिति बनने लगी।



सब बच्चे डरकर अपने-अपने घरों की तरफ भागने लगे। राजू भी तेजी से गाँव की तरफ बढ़ा। तभी उसे नदी की तेज धाराओं के बीच से किसी के रोने की आवाज सुनाई दी।

राजू ने मुड़कर देखा कि उनका 6 साल का पड़ोसी दोस्त, छोटू, एक ऊँचे पत्थर पर फंसा हुआ था। उसके चारों तरफ नदी का मटमैला और तेज पानी बह रहा था। छोटू बुरी तरह डरकर रो रहा था और मदद के लिए चिल्ला रहा था।

पानी का बहाव इतना तेज था कि बड़े-बड़े लोग भी उसमें उतरने से कतरा रहे थे। गाँव वाले रस्सियाँ लेने और मदद बुलाने के लिए दौड़ रहे थे, लेकिन छोटू के पास समय बहुत कम था। पत्थर धीरे-धीरे पानी में डूब रहा था।

राजू ने एक पल भी नहीं गंवाया। उसे याद आया कि नदी के किनारे ही एक चरवाहे ने अपनी लंबी और मजबूत रस्सी एक पेड़ से बांधकर छोड़ी थी।

राजू दौड़कर उस पेड़ के पास गया और फुर्ती से रस्सी खोल ली। उसने रस्सी का एक छोर किनारे के मजबूत जामुन के पेड़ से कसकर बांधा। रस्सी का दूसरा छोर अपने हाथ में लपेटकर वह सावधानी से तेज बहाव वाले पानी में उतर गया। पानी का दबाव बहुत ज्यादा था और राजू के पैर उखड़ रहे थे, लेकिन उसने हार नहीं मानी। उसने अपने डर पर काबू पाया, अपनी पूरी ताकत लगाई और किसी तरह तैरते व रस्सी के सहारे आगे बढ़ते हुए छोटू के पत्थर तक पहुँच गया।

राजू ने छोटू को दिलासा दिया, "डरो मत छोटू, मुझे कसकर पकड़ लो!"

छोटू ने राजू को अपनी पीठ पर कसकर पकड़ लिया। राजू ने रस्सी को मजबूती से पकड़ा और धीरे-धीरे कदम बढ़ाते हुए किनारे की तरफ लौटने लगा। तभी गाँव के कुछ बड़े लोग भी वहाँ पहुँच गए और उन्होंने रस्सी को खींचकर दोनों बच्चों को सुरक्षित पानी से बाहर निकाल लिया।

छोटू के माता-पिता की आँखों में आंसू थे। उन्होंने राजू को गले लगा लिया। पूरे गाँव ने राजू की इस सूझबूझ और अदम्य साहस की खूब तारीफ की। राजू ने साबित कर दिया था कि वीरता दिखाने के लिए बड़ी उम्र या बड़े शरीर की जरूरत नहीं होती, बस एक सच्चा और साहसी दिल चाहिए।

अगले वर्ष गणतंत्र दिवस के मौके पर राजू को उसकी इस बहादुरी के लिए राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

कहानी से सीख : सच्ची वीरता डर की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि डर के बावजूद दूसरों की भलाई के लिए आगे बढ़ना और सही समय पर सूझबूझ से काम लेना है।

संगीता देवी

(सहायक अध्यापक)

उच्च प्राथमिक विद्यालय बाघू

विकास क्षेत्र एवं जनपद- बागपत





खेल विधि : 2 डी आकृतियाँ

- ◆विषय- गणित
- ◆स्तर- उच्च प्राथमिक
- ◆आवश्यक सामग्री- रस्सी, चार्ट (शून्य निवेश सामग्री)
- ◆सीखने के परिणाम- विद्यार्थी गणित के 2 डी आकार जैसे- वर्ग, आयत, चतुर्भुज, त्रिकोण पंचकोण, षट्भुज, षट्कोण, अष्टकोण आदि के बारे में मूल जानकारी सीखते हैं।
- ◆छात्र आकृतियों के किनारों (corner), शिखर (vertex), कोण (angle), रेखा (line) आदि में अंतर प्रदर्शित कर सकते हैं।



श्रीमती पूजा चतुर्वेदी
सहायक अध्यापक
उच्च प्राथमिक विद्यालय घुँगराला
विकासखण्ड- हापुड़, जनपद- हापुड़





कारगिल विजय दिवस - कविता

कारगिल की धरती गवाह है,
भारत के वीर जवानों की।
उनके अदम्य साहस की,
उनके पावन बलिदानों की।।

बर्फीली ऊँची चोटियों पर,
जब दुश्मन ने आँख उठाई थी।
भारत माँ की रक्षा करने,
वीरों ने शपथ उठाई थी।।

हाथों में लेकर तिरंगा,
सीने में भारत का मान लिए।
मातृभूमि की रक्षा हेतु,
वीरों ने अपने प्राण दिए।।

ऊँचे-ऊँचे पर्वत थे,
राह कठिन और मौसम भारी।
लेकिन वीरों के हौसलों ने,
हर मुश्किल पर जीत उतारी।।

गोलियों की गूँज के बीच,
तिरंगे की शान बढ़ाई थी।
देशभक्ति के जज़्बे से,
वीरों ने विजय दिलाई थी।।

शहीदों की वह वीर कहानी,
हर पीढ़ी को याद रहेगी।
भारत माँ के वीर सपूतों की,
गाथा सदा आबाद रहेगी।।

तिरंगा जब-जब लहराएगा,
वीरों का सम्मान करेगा।
भारत का हर बच्चा उनके,
बलिदानों को याद करेगा।।



कारगिल की विजय हमें यह,
संदेश सदा देती है।
एकता, साहस और देशप्रेम से,
भारत की शक्ति बढ़ती है।।

नमन उन वीर जवानों को,
जिन्होंने देश बचाया था।
नमन उन अमर शहीदों को,
जिन्होंने तिरंगा लहराया था।।

उनकी वीरता अमर रहे,
उनका बलिदान अमर रहे।
भारत माँ के वीर सपूतों का,
यशगान सदा अमर रहे।।

आओ मिलकर शपथ उठाएँ,
देश की शान बढ़ाएँ हम।
वीरों के सपनों का भारत,
मिलकर सुंदर बनाएँ हम।।

सीमा पर जो प्रहरी जागे,
उनका हम सम्मान करें।
भारत माँ की पावन धरती,
पर गर्व सदा हम मान करें।।

कारगिल के अमर वीरों को शत-शत नमन!

डॉ. अंजू लता पटेल (एमओ)

पीओ एमओ श्री उच्च प्राथमिक विद्यालय करसड़ा

वि०ख०- मझवा, जनपद- मीरजापुर





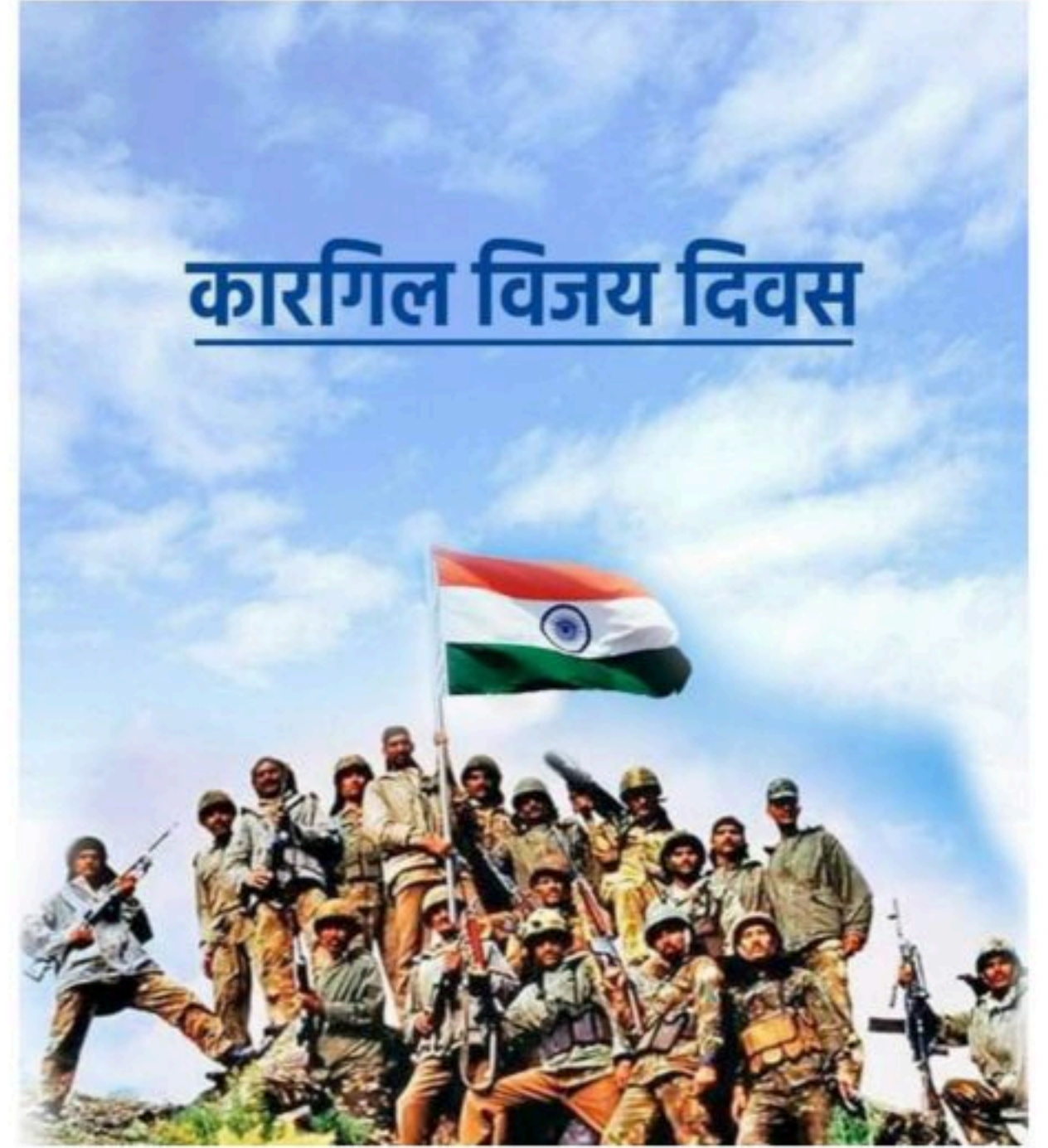
कारगिल के वीर

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर जब संकट गहराया था,
दुश्मन के नापाक इरादों ने पंजा फैलाया था।
द्रास, बटालिक, तोलोलिंग, साक्षी वीर कहानी के।
शत्रु काँप उठा जब देखा तेवर हिन्दुस्तानी के।।

गूँज उठा आकाश पूरा, जब 'विजय' का बिगुल बजाया था,
दुश्मन को खदेड़कर वापस, तिरंगा वहाँ लहराया था।
शत-शत नमन है उन वीरों को, जिन्होंने अपना आज दिया,
मातृभूमि की रक्षा की, देश का ऊँचा ताज किया।।

तब सोई नहीं भारत माँ, जागे थे वीर जवान यहाँ,
प्राण हथेली पर रखकर, लिखने चले नया इतिहास वहाँ।।
माइनस डिग्री की ठंड भी, उनके जज्बे को ना तोड़ सकी,
मौत भी सामने खड़ी रही, पर कदम उनके ना मोड़ सकी।।

सीने पर गोलियाँ खाईं पर, पीठ कभी ना दिखलाई,
हँसते-हँसते वीर सपूतों ने, अपनी जान गँवाई।
चलो याद करें उनकी कुर्बानी, जो लहू बहाकर सो गए,
कारगिल की पावन माटी में, जो सदा-सदा के लिए अमर हो गए।।



राज कुमार शर्मा
स्टेट एवार्ड टीचर
कम्पोजिट स्कूल टैपुवा माफ़ी
विकास क्षेत्र व जनपद-चित्रकूट





शतरंज

शतरंज (Chess) बुद्धि, धैर्य और रणनीति का एक महान खेल है, जिसे दुनिया भर में लाखों लोगों द्वारा खेला और पसंद किया जाता है। इसे 'खेलों का राजा' भी कहा जाता है क्योंकि यह केवल शारीरिक क्षमता का नहीं, बल्कि मानसिक कुशाग्रता का खेल है।

1. शतरंज का इतिहास (History of Chess) : शतरंज का आविष्कार भारत में हुआ माना जाता है। छठी शताब्दी के आसपास गुप्त राजवंश के समय इसे 'चतुरंग' के नाम से जाना जाता था, जिसका अर्थ है 'सेना के चार अंग' (हाथी, घोड़े, रथ और पैदल सैनिक)। भारत से यह खेल फारस (आज का ईरान) पहुँचा, जहाँ इसे 'शतरंज' नाम मिला। इसके बाद यह यूरोप और फिर पूरी दुनिया में फैल गया।

2. खेल की संरचना और गोटियाँ (Board and Pieces) : शतरंज का खेल 8×8 के ग्रिड वाले एक बोर्ड पर खेला जाता है, जिसमें कुल 64 वर्ग (32 सफेद और 32 काले) होते हैं। यह दो खिलाड़ियों के बीच खेला जाता है, जिनमें से एक के पास 16 सफेद और दूसरे के पास 16 काले मोहरे होते हैं। प्रत्येक खिलाड़ी के पास निम्नलिखित गोटियाँ होती हैं :

राजा (King) : खेल का सबसे महत्वपूर्ण मोहरा। यह किसी भी दिशा में केवल एक घर चल सकता है।

वजीर/रानी (Queen) : सबसे शक्तिशाली मोहरा। यह किसी भी दिशा में (सीधे या तिरछे) कितने भी घर चल सकती है।

ऊँट (Bishop) : यह केवल तिरछा (Diagonal) चल सकता है।

घोड़ा (Knight) : यह ढाई (2.5) घर 'L' की आकृति में चलता है और एकमात्र ऐसा मोहरा है जो दूसरों के ऊपर से कूद सकता है।

हाथी (Rook) : यह केवल सीधा (आगे-पीछे या दाएं-बाएं) चल सकता है।

प्यादा/सैनिक (Pawn) : यह शुरुआत में एक या दो घर और बाद में केवल एक घर आगे बढ़ सकता है। यह हमेशा तिरछे वार करके विरोधी को मारता है।

3. खेल का उद्देश्य और नियम (Objective of the Game) : शतरंज का मुख्य उद्देश्य विरोधी खिलाड़ी के राजा को घेरना है, जिसे 'शह और मात' (Checkmate) कहा जाता है। जब राजा पर हमला होता है और उसके पास बचने का कोई रास्ता नहीं बचता, तो खेल समाप्त हो जाता है। यदि कोई भी खिलाड़ी जीतने की स्थिति में नहीं होता, तो खेल 'ड्रा' (Draw) या 'स्टेलमेट' पर समाप्त होता है।

4. शतरंज खेलने के लाभ (Benefits of Playing Chess) : शतरंज केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह मस्तिष्क के लिए एक बेहतरीन व्यायाम है :



मानसिक क्षमता बढ़ाना : यह एकाग्रता, याददाश्त और तार्किक सोच (Logical Thinking) को बेहतर बनाता है।

रणनीतिक कौशल (Strategic Skills) : खिलाड़ी को अपनी चाल चलने से पहले विरोधी की अगली कई चालों का अनुमान लगाना पड़ता है, जिससे निर्णय लेने की क्षमता सुधरती है।

धैर्य और अनुशासन : यह खेल सिखाता है कि बिना सोचे-समझे लिया गया एक गलत फैसला पूरे खेल को हरा सकता है, जिससे जीवन में धैर्य की अहमियत समझ आती है।



किरण कुमारी

(सहायक अध्यापक)

कंपोजिट उच्च प्राथमिक विद्यालय निबाली

विकास क्षेत्र- बागपत, जनपद- बागपत





धनुरासन: शरीर को स्फूर्ति और रीढ़ को मजबूती देता 'धनुष आसन'

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी और घंटों कुर्सी पर बैठकर काम करने की आदत ने हमारी रीढ़ की हड्डी (Spine) को सुस्त और कमजोर बना दिया है। योग विज्ञान में शरीर को पुनः ऊर्जावान और लचीला बनाने के लिए कई आसनों का वर्णन है, जिनमें धनुरासन (Bow Pose) अत्यंत प्रभावी है। इस आसन में शरीर की आकृति एक खिंचे हुए धनुष के समान हो जाती है, इसलिए इसे धनुरासन कहा जाता है। यह आसन हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए एक वरदान की तरह है। आइए जानते हैं इसे करने की सही विधि, इसके लाभ और सावधानियां।



धनुरासन करने की सही विधि (Step-by-Step Method)

धनुरासन का पूरा लाभ उठाने के लिए इसे सही तकनीक से करना अनिवार्य है :

शुरुआती स्थिति : सबसे पहले योग मैट पर पेट के बल (औंधे) लेट जाएं। पैरों को पास रखें और हाथों को शरीर के बगल में सीधा रखें।

घुटने मोड़ें : अब अपने घुटनों को पीछे की ओर मोड़ें और अपनी एड़ियों को नितंबों (Hips) के पास लाने का प्रयास करें।

टखनों को पकड़ें : अपने दोनों हाथों से पीछे की ओर ले जाकर दोनों पैरों के टखनों (Ankles) को मजबूती से पकड़ें।

ऊपर उठें (मुख्य स्थिति) : एक गहरी सांस लेते हुए अपनी छाती और जांघों को जमीन से ऊपर उठाएं। अपने पैरों को हाथों से पीछे और ऊपर की तरफ खींचें।

संतुलन बनाएं : अब आपका पूरा शरीर केवल नाभि (Naval area) के बल पर टिका होना चाहिए। सिर को पीछे की ओर रखें और सामान्य रूप से सांस लेते रहें।

वापस आएँ : इस अवस्था में 15 से 30 सेकंड तक रुकें। इसके बाद सांस छोड़ते हुए धीरे-धीरे छाती और पैरों को जमीन पर वापस लाएं और मकरासन में विश्राम करें।

धनुरासन के चमत्कारी लाभ (Benefits)

नियमित रूप से धनुरासन का अभ्यास करने से शरीर को निम्नलिखित फायदे मिलते हैं :

रीढ़ की हड्डी का लचीलापन : यह रीढ़ की हड्डी को पीछे की ओर मोड़कर उसे मजबूत और लचीला बनाता है, जिससे कमर दर्द में आराम मिलता है।



पाचन तंत्र में सुधार : पेट पर दबाव पड़ने से जठराग्नि तेज होती है। यह कब्ज, गैस और अपच जैसी पेट की समस्याओं को दूर करता है।

वजन नियंत्रण : यह आसन पेट और जांघों की अतिरिक्त चर्बी (Fat) को तेजी से कम करने में मददगार है।

तनाव से मुक्ति : इसके अभ्यास से छाती फैलती है, जिससे फेफड़ों की कार्यक्षमता बढ़ती है और शरीर में ऑक्सीजन का प्रवाह सुधरता है। यह मानसिक तनाव और थकान को दूर करता है।

हार्मोनल संतुलन : यह थायराइड और एड्रिनल ग्रंथियों को सक्रिय कर हार्मोन के असंतुलन को ठीक करता है।

सावधानियां एवं निषेध (Precautions)

धनुरासन एक मध्यम स्तर का कठिन आसन है, इसलिए इसे करते समय कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए :

हर्निया, अल्सर या पेट की सर्जरी : यदि पेट में गंभीर समस्या हो या हाल ही में कोई ऑपरेशन हुआ हो, तो इसे कतई न करें।

हृदय और उच्च रक्तचाप : हाई बीपी, माइग्रेन या दिल की बीमारी से पीड़ित व्यक्तियों को इस आसन से बचना चाहिए।

कमर या रीढ़ की गंभीर चोट : यदि स्लिप डिस्क या गंभीर पीठ दर्द की समस्या हो, तो बिना चिकित्सीय परामर्श के इसका अभ्यास न करें।

गर्भावस्था : गर्भवती महिलाओं को यह आसन बिल्कुल नहीं करना चाहिए।

निष्कर्ष :

धनुरासन शारीरिक सुडौलता और आंतरिक अंगों की मालिश के लिए एक संपूर्ण योग पैकेज है। शुरुआत में इस आसन को करने से पहले भुजंगासन या शलभासन जैसे सरल अभ्यासों से शरीर को तैयार करना बेहतर होता है। यदि आप शुरुआत कर रहे हैं, तो चोट से बचने के लिए इसे किसी प्रमाणित योग प्रशिक्षक की देखरेख में ही सीखें।

जितेन्द्र कुमार (सोआ)

पी० एम० श्री प्राथमिक विद्यालय

धनौरा सिल्लर नगर न०।

विकास क्षेत्र व जनपद- बागपत





फिल्म का नाम- हवा हवाई, निर्देशक- अमोल गुप्ते

हवा हवाई एक प्रेरणादायक हिन्दी बाल फिल्म है, जिसका निर्देशन अमोल गुप्ते ने किया है। यह फिल्म बच्चों के सपनों, संघर्ष, मेहनत और आत्मविश्वास की सुंदर कहानी प्रस्तुत करती है। फिल्म का मुख्य पात्र अर्जुन एक गरीब परिवार का बच्चा है, जो चाय की दुकान पर काम करता है। उसके जीवन में अनेक कठिनाइयाँ हैं, लेकिन उसके मन में आगे बढ़ने और कुछ नया सीखने की इच्छा बनी रहती है।

अर्जुन को स्केटिंग करने वाले बच्चों को देखकर बहुत अच्छा लगता है। वह भी स्केटिंग सीखने का सपना देखता है। उसके सपने को पूरा करने में अनिकेत सर उसकी मदद करते हैं। अनिकेत सर बच्चों को स्केटिंग सिखाते हैं और अर्जुन की प्रतिभा को पहचानकर उसे प्रोत्साहित करते हैं। अर्जुन अपनी मेहनत, लगन और दृढ़ इच्छाशक्ति से धीरे-धीरे स्केटिंग सीखता है।

फिल्म में यह दिखाया गया है कि किसी भी बच्चे की प्रतिभा केवल उसके आर्थिक स्तर से निर्धारित नहीं होती। यदि बच्चे को सही मार्गदर्शन, अवसर और प्रोत्साहन मिले, तो वह अपने सपनों को साकार कर सकता है। फिल्म में बाल श्रम, गरीबी, शिक्षा और खेल के महत्व जैसे सामाजिक विषयों को भी संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया गया है।

इस फिल्म के पात्रों का अभिनय बहुत स्वाभाविक और प्रभावशाली है। पार्थो गुप्ते ने अर्जुन की भूमिका में शानदार अभिनय किया है। फिल्म की कहानी सरल, रोचक और भावनात्मक है। इसके दृश्य बच्चों को आकर्षित करते हैं और उन्हें मेहनत करने की प्रेरणा देते हैं।

निष्कर्ष : हवा हवाई एक उत्कृष्ट बाल फिल्म है, जो बच्चों को सपने देखने, कठिनाइयों से न घबराने और निरंतर प्रयास करने की सीख देती है। यह फिल्म बच्चों, अभिभावकों और शिक्षकों सभी के लिए उपयोगी एवं प्रेरणादायक है।



बबलू सोनी (सोआ)

प्राथमिक विद्यालय उत्तराष्ट्र

विकास खण्ड- बाबागंज, जनपद- प्रतापगढ़



अस्वीकरण (डिस्क्लेमर)

मिशन शिक्षण संवाद का मासिक संकलन 'शिक्षण संवाद' बेसिक शिक्षकों का आपसी सीखने-सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस संकलन में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस संकलन में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदाई होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्च कोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए सम्पादक मण्डल दावा नहीं करता है।

किसी भी सुझाव शिकायत के लिए मिशन के ईमेल- shikshansamvad@gmail.com या व्हाट्सएप नम्बर **9458278429** पर सम्पर्क कर सकते हैं।



1. मिशन शिक्षण संवाद ऐप :

<https://play.google.com/store/apps/details?id=com.missionshikshansamvad.app>

2. फेसबुक पेज : <http://www.facebook.com/shikshansamvad/>

3. फेसबुक समूह : <http://www.facebook.com/groups/118010865464649>

4. मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉग : <https://www.shikshansamvad.blogspot.com>

5. X : <https://twitter.com/shikshansamvad?t=t61sjplXv4SmGJcD3l8x8Q&s=09>

6. यू-ट्यूब : <https://www.youtube.com/channel/UCPbbM1f9CQuxLymELvGgPig>

7. व्हाट्सएप नं० : 9458278429

8. ई-मेल : shikshansamvad@gmail.com

9. टेलीग्राम : <https://t.me/missionshikshansamvad>

10. वेबसाइट : www.missionshikshansamvad.com



विमल कुमार
मिशन शिक्षण संवाद

